लगान (RENT) तथा रिकॉर्डो का लगान सिद्धांत

लगान (RENT) का अर्थ

दैनिक जीवन में,

लगान शब्द से तात्पर्य उस राशि से होता है जो बहुत ही वस्तुओं जैसे मकान खेत खान आदि के उपयोग के फलस्वरूप इन के मालिको को दी जाती है।

अर्थशास्त्र में,

लगान से तात्पर्य राष्ट्रीय आय के उस पर विभाग से है जो भूमि के प्रयोग के बदले में भूस्वामियों को दिया जाता है

लगान की परिभाषाएं

प्रतिष्ठित अथवा पुराने अर्थशास्त्री द्वारा दी गई परिभाषाएं:

रिकार्डो के अनुसार,

"लगान भूमि की उपज का भाग है जो भूमि पति को भूमि की मौलिक एवं अविनाशी शक्तियों के प्रयोग के लिए दिया जाता है"

टॉमस के अनुसार,

"लगान को भूमि तथा अन्य प्रकृतिदत्त निश्चित उपहारों के स्वामित्व से प्राप्त होने वाली आय के रूप में परिभाषित किया जा सकता है"

मार्शल के अनुसार,

"भूमि तथा अन्य निशुल्क प्रकृतिदत्त उपहारों के स्वामित्व से होने वाली आय को अर्थशास्त्र में साधारणतया लगान कहते हैं"

इस प्रकार *लगान वह भुगतान है जो भू- स्वामी को भूमि के प्रयोग के बदले में दिया जाता है जिससे आधिक्य कहा जाता है क्योंकि वे स्वामी को बिना परिश्रम के प्राप्त होता है*

आधुनिक अर्थशास्त्रियों के द्वारा दी गई लगान की परिभाषाएं

बोल्डिंग के शब्दों में

"आर्थिक लगान वह भुगतान है जो किसी संतुलन की स्थिति के किसी उद्योग में लगे उत्पत्ति के किसी साधन की एक ईकाई को दिया जाता है और यह उस न्यूनतम रकम से अधिक होता है जो किसी साधन विशेष को इसके वर्तमान व्यवसाय को बनाए रखने के लिए आवश्यक होता है"

जॉन रॉबिन्सन के अनुसार

"किसी साधन का लगान उस साधन में उस बचत को कहते हैं जो उसे न्यूनतम राशि के अतिरिक्त उपलब्ध होता है जिसके कारण यह साधन उस व्यवसाय में कार्य करने के लिए आकर्षित होता है"

लगान के प्रकार

कुल लगान | आर्थिक लगान | संविदा या ठेके का लगान

कुल लगान (GROSS RENT)

साधारण बोलचाल की भाषा में लगान शब्द का प्रयोग जिस अर्थ में लिया जाता है वह कुल लगान है, जो किसी किरायेदार किसी भी भूमि अथवा मकान उपयोग के बदले में देता है।

कुल लगान में भूमि के पुरस्कार के अतिरिक्त निम्नलिखित चीजें सम्मिलित रहती है

- भूमि के सुधार में लगाए गए पूंजी का ब्याज
- भूमि के उचित प्रबंध करने का ब्याज
- भू स्वामी द्वारा उठायी गयी जाने वाली जोखिम का पुरस्कार

कुल लगान = आर्थिक लगान + सुधार में लगाई गई पूंजी का ब्याज + प्रबंध करने का व्यय + जोखिम का प्रतिफल

आर्थिक लगान (ECONOMIC RENT)

आर्थिक लगान कुल लगान का एक भाग है जो भू स्वामी को भूमि के उपयोग के बदले में प्राप्त होता है

कृषि से प्राप्त कुल आय में उत्पादन लागत घटा देने के पश्चात जो शेष बचता है उसे आर्थिक लगान कहते हैं। इस प्रकार, आर्थिक लगान उस अतिरिक्त लगान को कहते हैं जो उत्पादन के किसी भी साधन को जिसकी पूर्ति पूर्णतः लोचदार नहीं होती, प्राप्त होता है।

प्रसंविदा या ठेके का लगान (CONTRACT RENT)

प्रसंविदा लगान वह है जो भू स्वामी या कृषक के परस्पर समझौतों के द्वारा निश्चित होता है क्योंकि प्रसंविदा लगान का आधार पारस्परिक समझौता है इसीलिए वह भूमि के आर्थिक लगान के बराबर, इससे कम या अधिक हो सकता है

वास्तव में यह लगान भू स्वामियों तथा कृषि को के बीच प्रतियोगिता पर निर्भर होता है यदि भूमि की मांग अधिक है तो लगान भी अधिक होगा और यदि भूमि प्रतियों में भूमि की लगान पर उठाने के लिए बहुत अधिक प्रतियोगिता है तो लगान कम होगा

लगान निर्धारण के सिद्धांत

- रिकार्डों का लगान सिद्धांत या लगान का प्रतिष्ठित सिद्धांत
- लगान का आधुनिक सिद्धांत

रिकार्डों का लगान सिद्धांत (RICARDIAN THEORY OF RENT)

डेविड रिकार्डों ने लगान की समस्या को अधिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रतिपादित किया और सिद्धांत अधिक लोकप्रिय हुआ

रिकॉर्डो ने लगान के बारे में कहा है कि *लगान भूमि की उपज का भाग है जो भू स्वामियों को भूमि की मौलिक एवं आप विनाशी शक्तियां के उपभोक्ता उपलक्ष्य में दिया जाता है*

सिद्धांत की मान्यतायें

- यह सिद्धांत दीर्घकालीन है
- यह सिद्धांत सीमांत भूमि एवं लगान रहित भूमि के विचार पर आधारित है
- यह मान लिया गया है कि भूमि पूर्ति की मात्रा तथा गुण दोनों दृष्टियों से सीमित है
- लगान केवल भूमि पर ही उत्पन्न होता है अर्थात भूमि को छोड़कर उत्पत्ति की किसी अन्य साधन में लगना नहीं होता
- विभिन्न विभागों को उनकी उर्वरता के क्रम में जोता जाता है अर्थात जहाँ सबसे उपजाऊ भूमि पर कृषि की जाती है फिर धीरे धीरे निम्न श्रेणी की भूमि पर खेती की जाती है
- लगान उत्पन्न होने के कारण भूमि की उर्वरता तथा स्थिति में विभिन्नता है
- यह सिद्धांत इस मान्यता पर आधारित है कि कृषि का उत्पादन ह्रास नियम लागू होता है और जनसंख्या के बढ़ने की प्रकृति पाई जाती है

सिद्धांत की व्याख्या

रिकार्डो के अनुसार लगान केवल भूमि साधन को ही प्राप्त होता है क्योंकि भूमि की कुछ विशिष्ट विशेषताएँ होती है जैसे-

- भूमि प्रकृति का नि:शुल्क उपहार है अर्थात भूमि को प्राप्त करने के लिए समाज को कोई लागत नहीं लगानी पड़ती
- भूमि की पूर्ति सीमित होती है और समाज की दृष्टि से अर्थात भूमि की मांग में तदनुरूप उसकी पूर्ति को घटाया या बढाया नहीं जा सकता

रिकार्डो के अनुसार लगान प्रकृति की उदारता तथा सहयोग का परिणाम नहीं बल्कि प्रकृति की **कृपणता या सीमितता** के कारण प्राप्त होता है

रिकार्डो के लगान सिद्धांत की व्याख्या दो शीर्षकों में होती है-

- विस्तृत खेती में लगान
- गहरी या गहन खेती में लगान

विस्तृत खेती के अंतर्गत लगान (Rent in Extension Cultivation)

प्राचीन काल में भूमि अपरिमित मात्रा में उपलब्ध होने के कारण व्यक्ति अपनी इच्छानुसार भूमि को काम में लाता था ऐसी स्थिति में भूमि पर कोई लगाना उपलब्ध नहीं होता था परन्तु जैसे जैसे जनसंख्या बढ़ती गई लोगों की भूमि की मांग भी बढ़ी और अच्छी भूमि की मात्रा सीमित होने के कारण लोग घटिया भूमि पर खेती करने लगे इन दोनों प्रकार की भूमि उपजाऊ तथा कम उपजाऊ बढ़िया एवं घटिया पर पूंजी और श्रम की समा निकायों के प्रयोग करने पर भी कम उपजाऊ की उपज अधिक उपजाऊ भूमि की अपेक्षा कम होती है इस तरह से लगान बढ़ी है और घटिया भूमि की उपज के अंतर के बराबर होता है अतः लगान एक प्रकार की विभेदात्मक बचत है।

रिकॉर्डो के अनुसार, *"लगान अधिसीमंत तथा सीमांत भूमि की उपजों का अंतर है।"*

रिकॉर्डो का मत है कि सीमांत भूमि के अतिरिक्त अन्य सभी भूमि पर आए तथा उत्पादन लागत का अंतर अधिक होता है और यही अंतर ही आर्थिक लगान है

उदाहरण

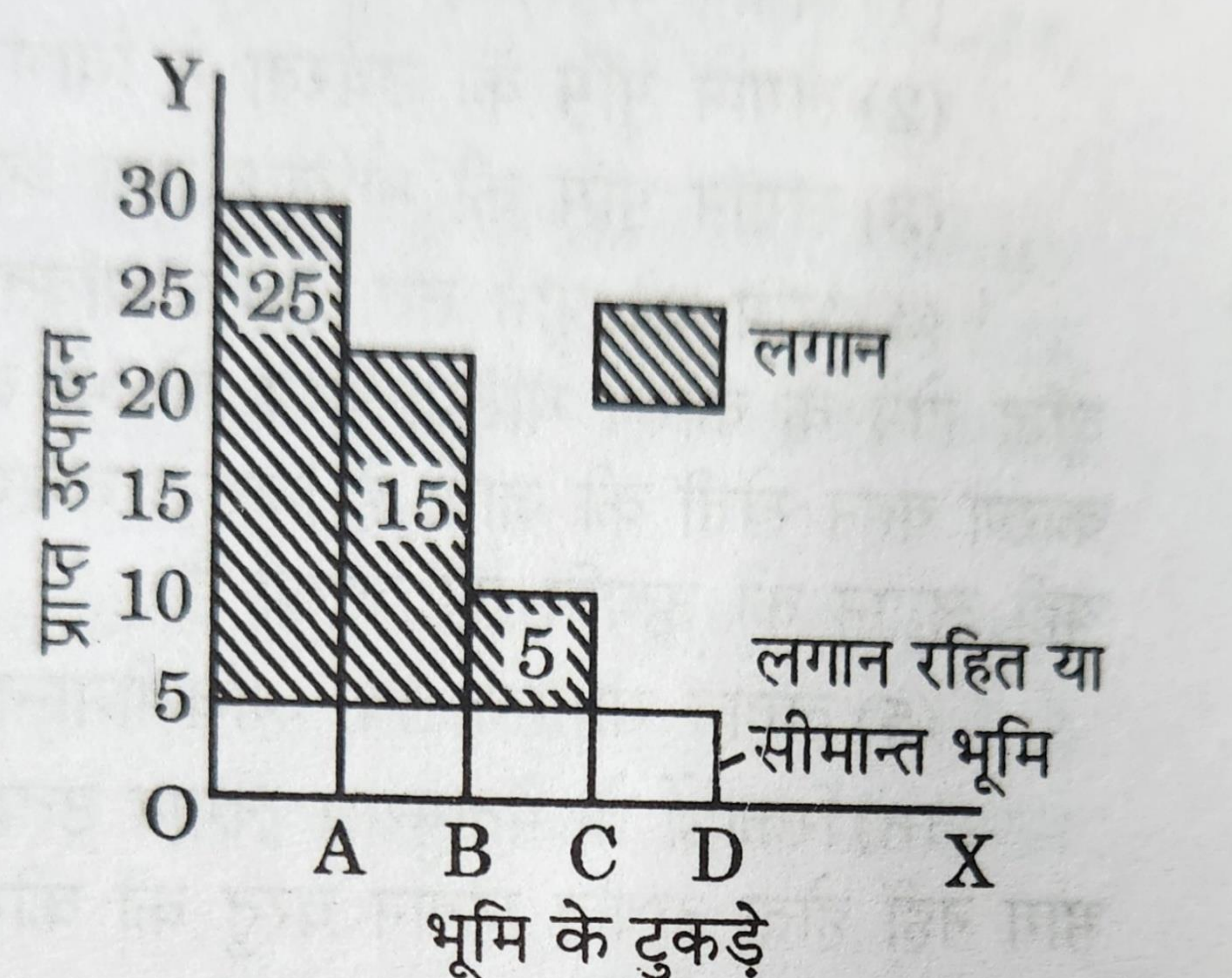

विस्तृत खेती में लगान

गहन खेती के अंतर्गत लगान (Rent Under Intensive Cultivation)

जब एक ही भूमि पर श्रम तथा पूंजी की अतिरिक्त इकाइयां लगाकर उत्पादन बढ़ाया जाता है तो इससे गहरी खेती का गहन खेती कहते हैं।

जब किसी भूमि खंड पर क्रमशः पूंजी की अधिक मात्राओं का प्रयोग किया जाता है तो उत्पत्ति ह्रास नियम की क्रियाशीलता के कारण इन मात्रा में सीमांत उत्पादन घटती जाती है सीमांत मात्रा के उत्पादकता ठीक उसकी लागत के बराबर होगी अर्थात इस पर कोई आधिक्य प्राप्त नहीं होगा परंतु इसके पूर्व की मात्रा में उत्पादकता उनकी लागत से अधिक होगी

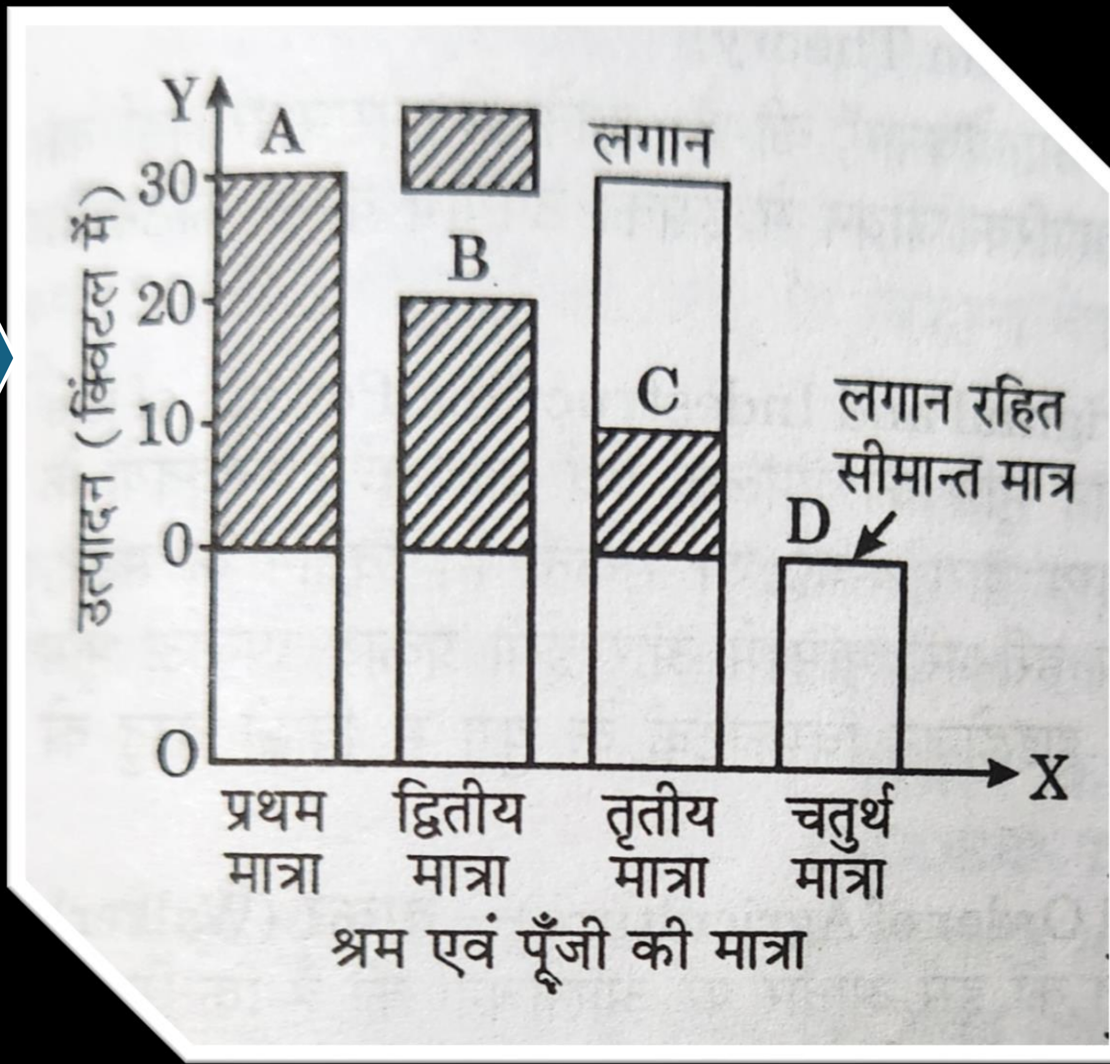

उदाहरण,

रिकॉर्डो के सिद्धांत की आलोचनायें

भूमि की मौलिक तथा अविनाशी शक्तियां

रिकॉर्डो के अनुसार भूमि मौलिक एवं अविनाशी शक्ति यों के कारण उत्पन्न होती हैं जबकि वास्तविकता में आज के आधुनिक युग में बंजर भूमि को भी हरी भरी भूमि में और हरी भरी भूमि को बंजर भूमि में बदला जा सकता है

कृषि का ऐतिहासिक क्रम गलत है

रिकॉर्डो ने कृषि का जो क्रम बताया कि पहले उर्वरता के अनुसार खेती की जाएगी उसके बाद कम उर्वरता में जबकि वास्तविकता में पहले उस भूमि पर खेती की जाती है, जहाँ यातायात की सुविधा पर्याप्त हो

सीमांत या लगानहीन भूमि की कल्पना मिथक है

वास्तविक जीवन में लगा नहीं भूमि को देखने को नहीं मिलती क्योंकि जनसंख्या की वृद्धि होने पर जब भूमि की पूर्ति बढ़ाया नहीं जा सकता तो घटिया भूमि पर भी लगान लिया जाने लगता है

प्रतियोगिता पूर्ण प्रतियोगिता और दीर्घकाल की मान्यताएँ आवास्तविक है

वास्तविक जीवन में आप अपूर्ण प्रतियोगिता तथा अल्पकाल ही महत्वपूर्ण है क्योंकि **कीन्स** के अनुसार दीर्घकाल में तो हम सभी मर जाते हैं और दीर्घा लोगों की समस्याएं समाप्त हो जाती है

लगान भूमि की मात्रा सीमित होने के का परिणाम है, न कि उर्वरता का

आलोचकों का कहना है लगान भूमि की उर्वरता के कारण ही नहीं बल्कि इसकी सीमितता के कारण होता है क्योंकि अच्छी भूमि के लगान का प्रादुर्भाव इसलिए होता है कि वह सीमित है और जिसके कारण कम भूमि का उपयोग करना आवश्यक हो जाता है